इकाई 6 हल् सन्धि – भाग 1

इकाई की रूपरेखा

6.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- हल् सन्धि के **स्तोः श्चुना श्चुः** (8.4.40) सूत्र से लेकर **शश्छोऽटि** (8.4.63) तक के सूत्रों के सूत्रार्थ एवं उदाहरणादि से परिचित हो सकेंगे।
- हल् सन्धि के अन्तर्गत श्चुत्व, ष्टुत्व, जश्त्व, चर्त्व, परसवर्ण, पूर्वसवर्ण, अनुनासिक और छत्व सन्धि के स्थलों में सन्धि एवं सन्धिविच्छेद करना तथा उसकी प्रक्रिया को जान सकेंगे।
- श्चुत्व और ष्टुत्व सन्धिविधायक सूत्रों के अपवादरूप निषेध सूत्रों के कार्यविधि से परिचित हो सकेंगे।
- परिभाषासूत्रों की विधिसूत्रों के लिए क्या उपयोगिता है? यह भी जान सकेंगे।
- त्रिपादिस्थ सूत्रों के उत्तरोत्तर असिद्धत्व एवं उनके पूर्वापर प्रवृत्ति को भी समझ सकेंगे।

6.1 प्रस्तावना

इस इकाई से पूर्व अच् सन्धि की दो इकाइयों के अध्ययन के माध्यम से आपने अचों के मध्य होने वाली विभिन्न सन्धियों का अध्ययन किया। प्रस्तुत इकाई में आप हल् सन्धि का अध्ययन करेंगे। हल् सन्धि से अभिप्राय है हलों (व्यञ्जनों) के मध्य होने वाली सन्धि। जिस प्रकार अच् सन्धि में प्रायः दो अच् मिलकर एक अच् हो जाते हैं, हल् सन्धि में ऐसा नहीं होता है। इस सन्धि में प्रायः एक हल् दूसरे समीपवर्ती हल् को अपने जैसा बनाने का प्रयास करता है अर्थात् पूर्व अथवा पर हल् वर्ण अपने पूर्व या पर को अपने सदृश बनाता है। यथा हल् सन्धि के अन्तर्गत श्चुत्वसन्धि में शकार और चवर्ग अपने पूर्व और पर दोनों में से किसी ओर विद्यमान सकार एवं तवर्ग को अपने सदृश (शकार एवं चवर्ग) बना देते हैं। हल् सन्धि में मध्यवर्ती व्यञ्जनों का विकल्प से लोप करके एक से अधिक रूप भी बन जाते हैं। जैसे उत्+थ्+थान इस प्रयोग में

मध्यवर्ती प्रथम थकार का विकल्प से लोप होकर के दो रूप उत्थानम् एवं उत्त्थानम् बनते हैं।

6.2 हल् सन्धि –स्तोः श्चुना श्चुः सूत्र से शश्छोऽटि सूत्र पर्यन्त।

सूत्र – स्तोः श्चुना श्चुः (8.4.40)

वृत्ति – सकारतवर्गयोः शकारचवर्गाभ्यां योगे शकारचवर्गौ स्तः।

सूत्रार्थ – शकार और चवर्ग के साथ योग होने पर सकार और तवर्ग के स्थान पर शकार और चवर्ग आदेश होता है।

उदाहरण – रामश्शेते। रामश्चिनोति। सच्चित्। शार्ङ्गिञ्जय।

व्याख्या – यह श्चुत्वविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद हैं। 'स्तोः' षष्ठी एकवचन, 'श्चुना' तृतीया एकवचन और 'श्चुः' यह प्रथमा एकवचन का पद है। सकार एवं तवर्ग (त्,थ्,द्,ध्,न्) के स्थान पर शकार एवं चवर्ग (च्,छ्,ज्,झ्,ञ्) आदेश होता है, यदि सकार और तवर्ग से शकार और चवर्ग का योग (मेल) हो तो। यह मेल दो प्रकार से हो सकता है (1) सकार अथवा तवर्ग के बाद शकार या चवर्ग हो, (2) सकार अथवा तवर्ग से पहले शकार या चवर्ग हो, अर्थात् सकार, चवर्ग से अव्ययहित पूर्व या पर शकार, चवर्ग हो तो सकार, तवर्ग के स्थान में शकार, चवर्ग हो जाता है। यहाँ स्थानी और आदेश की संख्या बराबर है अतः क्रमानुसार आदेश होता है।

रूपसिद्धि –

रामश्शेते – रामस्+शेते यहाँ पर रामस् यह राम शब्द का प्रथमा एकवचन का रूप है, सकार को विसर्ग के विकल्प पक्ष में यह स्थिति होती है। इस स्थिति में प्रस्तुत सूत्र **स्तोः श्चुना श्चुः** से रामस् के अन्तिम सकार से परे शेते घटक आदि शकार है जिससे सकार का मेल होना है अतः सकार को शकार होकर के रामश्शेते रूप सिद्ध हुआ।

रामश्चिनोति – रामस्+चिनोति इस स्थिति में **स्तोः श्चुना श्चुः** सूत्र से रामस् के सकार से परे चकार है, अतः सकार को शकार होकर के रामश्चिनोति रूप सिद्ध हुआ।

सच्चित् – सत्+चित् इस स्थिति में **स्तोः श्चुना श्चुः** से सत् के तकार से परे चकार है, अतः तकार को चकार होकर सच्चित् रूप सिद्ध हुआ।

शार्ङ्गिञ्जय – शार्ङ्गिन्+जय इस स्थिति में **स्तोः श्चुना श्चुः** सूत्र से शार्ङ्गिन् के नकार से परे जकार है, अतः नकार को ञकार होकर के शार्ङ्गिञ्जय रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – शात्(8.4.44)

वृत्ति – शात्परस्य तवर्गस्य श्चुत्वं न स्यात्।

सूत्रार्थ – शकार से परे तवर्ग के स्थान पर चवर्ग आदेश नहीं होता है।

उदाहरण – विश्नः। प्रश्नः।

व्याख्या – यह निषेधार्थक विधिसूत्र है। इस सूत्र का एकमात्र पद शात् पंचमी एकवचन का है तो और न इन दो पदों की अनुवृत्ति आती है। पूर्वसूत्र **स्तोः श्चुना श्चुः** से शकार से परे तवर्ग को चवर्ग होना प्राप्त है, जिसका निषेध यह सूत्र करता है।

रूपसिद्धि –

विश्नः – विश्+न इस स्थिति में **स्तोः श्चुना श्चुः** सूत्र से शकार से परे नकार (का योग होने पर) को ञकार होना प्राप्त है, जिसका प्रस्तुत सूत्र **शात्** से शकार से परे तवर्गस्थ नकार होने के कारण निषेध हुआ। विश्+न इस स्थिति में वर्णसम्मेलन तथा स्वादिकार्य होकर विश्नः रूप सिद्ध हुआ।

प्रश्नः – प्रश्+न इस स्थिति में **स्तोः श्चुना श्चुः** से शकार से परे नकार (का योग होने पर) को ञकार होना प्राप्त है, जिसका प्रस्तुत सूत्र **शात्** से शकार से परे तवर्गस्थ नकार होने के कारण निषेध हुआ। प्रश्+न इस स्थिति में वर्णसम्मेलन तथा स्वादिकार्य होकर प्रश्नः रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – ष्टुना ष्टुः(8.4.41)

वृत्ति – स्तोः ष्टुना योगे ष्टुः स्यात्।

सूत्रार्थ – षकार एवं टवर्ग के साथ योग होने पर सकार एवं तवर्ग के स्थान पर षकार एवं टवर्ग आदेश होता है।

उदाहरण – रामष्षष्ठः। रामष्टीकते। पेष्टा। तट्टीका। चक्रिण्ढौकसे।

व्याख्या – यह ष्टुत्वविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। 'ष्टुना' तृतीया एकवचन और 'ष्टुः' यह प्रथमा एकवचन का पद है। सकार एवं तवर्ग (त्,थ्,द्,ध्,न्) के स्थान पर षकार एवं टवर्ग (ट्,ठ्,ड्,ढ्,ण्) आदेश होता है, यदि सकार और तवर्ग से षकार और टवर्ग का योग (मेल) हो तो। यह मेल दो प्रकार से हो सकता है (1) सकार अथवा तवर्ग के बाद षकार या टवर्ग हो, (2) सकार अथवा तवर्ग से पहले षकार या टवर्ग हो, अर्थात् सकार, तवर्ग से अव्ययहितपूर्व या पर षकार, टवर्ग हो तो सकार, तवर्ग के स्थान में षकार, टवर्ग हो जाता है। यहाँ स्थानी और आदेश की संख्या बराबर है अतः क्रमानुसार आदेश होता है।

रूपसिद्धि –

रामष्षष्ठः – रामस्+षष्ठ यहाँ पर रामस् के सकार को विसर्ग के विकल्प पक्ष में यह स्थिति होती है। इस स्थिति में प्रस्तुत सूत्र **ष्टुना ष्टुः** से रामस् के सकार से परे षकार है जिससे सकार का मेल होना है अतः सकार को मूर्धन्य षकार होकर रामष्षष्ठः रूप सिद्ध हुआ।

रामष्टीकते – रामस्+टीकते इस स्थिति में **ष्टुना ष्टुः** से रामस् के सकार से परे टीकते का टकार है, अतः सकार को मूर्धन्य षकार होकर रामष्टीकते रूप सिद्ध हुआ।

पेष्टा – पेष्+ता इस स्थिति में **ष्टुना ष्टुः** से पेष् के षकार से परे तकार है, अतः तकार को मूर्धन्य टकार होकर पेष्टा रूप सिद्ध हुआ।

तट्टीका – तत्+टीका इस स्थिति में **ष्टुना ष्टुः** से तत् के अन्तिम तकार से परे टकार है, अतः तकार को टकार होकर तट्टीका रूप सिद्ध हुआ।

चक्रिण्ढौकसे – चक्रिन्+ढौकसे इस स्थिति में **ष्टुना ष्टुः** सूत्र से चक्रिन् के नकार से परे ढौकसे का ढकार है, अतः उस नकार को णकार होकर चक्रिण्ढौकसे रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – न पदान्ताट्टोरनाम्(8.4.42)

वृत्ति – पदान्ताट्टवर्गात्परस्यानामः स्तोः ष्टुर्न स्यात्। षट् सन्तः। षट् ते। पदान्तात् किम्? ईट्टे। टोः किम्? सर्पिष्टमम्।

सूत्रार्थ – पदान्त टवर्ग से परे नाम् के नकार को छोड़कर अन्य सकार एवं तवर्ग को षकार एवं टवर्ग (ष्टुत्व) नहीं होता है।

उदाहरण – षट् सन्तः। षट् ते। पदान्तात् किम्? ईट्टे। टोः किम्? सर्पिष्टमम्।

व्याख्या – यह ष्टुत्वनिषेधक विधिसूत्र है। इस सूत्र में चार पद हैं। 'न 'यह अव्यय, 'अपदान्तात्' और 'टोः' ये दोनों पंचमी एकवचन तथा 'अनाम्' यह षष्ठी बहुवचन का पद है। पूर्वसूत्र से प्राप्त ष्टुत्व का पदान्त टवर्ग से परे सकार एवं तवर्ग को ष्टुत्व आदेश होने का यह सूत्र निषेध करता है, नाम् शब्द को छोड़कर। सूत्र में पदान्त टवर्ग से परे ही ष्टुत्व का निषेध करने से ईट्+ते यहाँ पर निषेध नहीं होता अतः ष्टुत्व होकर ईट्टे यह रूप सिद्ध होता है। टवर्ग से परे ही केवल निषेध होता है ऐसा कहने से षकार से परे ष्टुत्व का निषेध नहीं होगा। जिसके फलस्वरूप सर्पिष्+तमम् यहाँ पर ष्टुत्व होकर सर्पिष्टमम् रूप बनेगा।

रूपसिद्धि –

षट् सन्तः – षड्+सन्त इस स्थिति में **ष्टुना ष्टुः** सूत्र से षड् के डकार से परे सन्त के सकार को ष्टुत्व (षकार) प्राप्त है। षड् का डकार पदान्त में है अतः **न पदान्ताट्टोरनाम्** इस सूत्र से पदान्त टवर्ग से परे होने के कारण सकार को ष्टुत्व (षकार) का निषेध हुआ। षड्+सन्त इस स्थिति में **खरि च** सूत्र से डकार को चर्त्व (टकार) होकर षट् सन्तः रूप सिद्ध हुआ।

षट् ते – षड्+ते इस स्थिति में **ष्टुना ष्टुः** सूत्र से षड् के डकार से परे तकार को ष्टुत्व (टकार) प्राप्त है। षड् का डकार पदान्त में है अतः **न पदान्ताट्टोरनाम्** से पदान्त टवर्ग से परे होने के कारण तकार को ष्टुत्व (टकार) होने का निषेध हुआ। षड्+ते इस स्थिति में **खरि च** सूत्र से डकार को चर्त्व (टकार) होकर षट् ते रूप सिद्ध हुआ।

वार्तिक – अनाम्नवतिनगरीणामिति वाच्यम्।

अर्थ – पदान्त टवर्ग से परे नाम्, नवति और नगरी शब्दों के नकार को छोड़कर अन्य सकार एवं तवर्ग को षकार एवं टवर्ग नहीं होता है, ऐसा कहना चाहिए। अर्थात् पदान्त टवर्ग से परे नाम्, नवति और नगरी शब्दों के नकार को ष्टुत्व हो जायेगा।

उदाहरण – षण्णाम्। षण्णवतिः। षण्णगर्यः।

रूपसिद्धि –

षण्णाम् – षड्+नाम् इस स्थिति में **ष्टुना ष्टुः** से षड् के डकार से परे नाम् के नकार को ष्टुत्व (णकार) प्राप्त है। षड् का डकार पदान्त में है अतः **न पदान्ताट्टोरनाम्** से पदान्त टवर्ग से परे होने के कारण नकार को ष्टुत्व (णकार) होने का निषेध प्राप्त था जिसका सूत्रस्थ अनाम् पद एवं **अनाम्नवतिनगरीणामिति वाच्यम्** इस वार्तिक से निषेध हुआ। जिसके फलस्वरूप **ष्टुना ष्टुः** इस सूत्र से ष्टुत्व (णकार) हुआ। षड्+णाम् इस स्थिति में **प्रत्यये भाषायां नित्यम्** इस वार्तिक से डकार को भी णकार होकर षण्णाम् रूप सिद्ध हुआ।

षण्णवतिः – षड्+नवति इस स्थिति में **ष्टुना ष्टुः** सूत्र से षड् के डकार से परे नवति के नकार को ष्टुत्व (णकार) प्राप्त है। षड् का डकार पदान्त में है अतः **न पदान्ताट्टोरनाम्** से पदान्त टवर्ग से परे होने के कारण नकार को ष्टुत्व (णकार) होने का निषेध प्राप्त था जिसका **अनाम्नवतिनगरीणामिति वाच्यम्** इस वार्तिक से निषेध हुआ। जिसके फलस्वरूप **ष्टुना ष्टुः** से ष्टुत्व (णकार) हुआ। षड्+णवति इस स्थिति में **यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा** सूत्र से डकार को भी विकल्प से णकार एवं स्वादिकार्य होकर षण्णवतिः रूप सिद्ध हुआ।

षण्णगर्यः – षड्+नगर्य इस स्थिति में **ष्टुना ष्टुः** सूत्र से षड् के डकार से परे नगर्य के नकार को ष्टुत्व (णकार) प्राप्त है। षड् का डकार पदान्त में है अतः **न पदान्ताट्टोरनाम्** से पदान्त टवर्ग से परे होने के कारण नकार को ष्टुत्व (णकार) होने का निषेध प्राप्त था जिसका **अनाम्नवतिनगरीणामिति वाच्यम्** इस वार्तिक से निषेध हुआ। जिसके फलस्वरूप **ष्टुना ष्टुः** से ष्टुत्व (णकार) हुआ। षड्+णगर्य इस स्थिति में **यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा** से डकार को भी विकल्प से णकार एवं स्वादिकार्य होकर षण्णगर्यः रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – तोः षि(8.4.43)

वृत्ति – न ष्टुत्वम्।

सूत्रार्थ – षकार के परे रहते तवर्ग को ष्टुत्व (टवर्ग) नहीं होता है।

उदाहरण – सन्षष्ठः।

व्याख्या – यह ष्टुत्वनिषेधक विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। 'तोः' षष्ठी एकवचन और 'षि' यह सप्तमी एकवचन का पद है। न और ष्टु इन पदों की अनुवृत्ति आती है। इस सूत्र से षकार परे रहते पूर्वस्थ तवर्ग को टवर्ग होने का निषेध होता है। अतः यह सूत्र **ष्टुना ष्टुः** का अपवाद सूत्र है।

रूपसिद्धि –

सन्षष्ठः – सन्+षष्ठ इस स्थिति में षष्ठ घटक आदि षकार के परे रहते **ष्टुना ष्टुः** से सन् के नकार को ष्टुत्व (णकार) प्राप्त है। जिसका **तोः षि** इस सूत्र से षकार परे होने के कारण निषेध होकर सन्षष्ठः रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – झलां जशोऽन्ते(8.2.39)

वृत्ति – पदान्ते झलां जशः स्युः।

सूत्रार्थ – पदान्त में विद्यमान जो झल् उसके स्थान पर जश् आदेश होता है।

उदाहरण – वागीशः।

व्याख्या – यह जश्त्वविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद हैं। 'झलाम्' षष्ठी बहुवचन, 'जशः' प्रथमा बहुवचन और 'अन्ते' यह सप्तमी एकवचन का पद है। झल् प्रत्याहार के अन्तर्गत वर्गों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ वर्ण एवं ऊष्म (श्,ष्,स्,ह्) वर्ण आते हैं। जश् के अन्तर्गत वर्गों के तृतीय वर्ण आते हैं। **स्थानेऽन्तरतमः** सूत्र की सहायता से स्थान साम्य के अनुसार अधोलिखित आदेश होंगे–

यथा– क्, ख्, ग्, घ् और ह् के स्थान पर ग् आदेश
च्, छ्, ज्, झ् और श् के स्थान पर ज् आदेश
ट्, ठ्, ड्, ढ् और ष् के स्थान पर ड् आदेश
त्, थ्, द्, ध् और स् के स्थान पर द् आदेश
प्, फ्, ब् और भ् के स्थान पर ब् आदेश

रूपसिद्धि –

वागीशः – वाक्+ईश इस स्थिति में **झलां जशोऽन्ते** सूत्र से पदान्त में स्थित झल् (वाक् शब्द के अन्तिम क्) को जश् (गकार) हुआ। वाग्+ईश इस स्थिति में वर्णसम्मेलन तथा विभक्तिकार्य होकर वागीशः रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा(8.4.45)

वृत्ति – यरः पदान्तस्यानुनासिके परेऽनुनासिको वा स्यात्।

सूत्रार्थ – अनुनासिक वर्ण के परे रहते पदान्त यर् के स्थान पर विकल्प से अनुनासिक होता है।

उदाहरण – एतन्मुरारिः, एतद् मुरारिः।

व्याख्या – यह अनुनासिकविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में चार पद हैं। 'यरः' षष्ठी एकवचन, 'अनुनासिके' सप्तमी एकवचन, 'अनुनासिकः' प्रथमा एकवचन और 'वा' यह अव्यय पद है। जिन वर्णों का उच्चारण मुख और नासिका दोनों से होता है उनकी अनुनासिकसंज्ञा (**मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः**) होती है। अनुनासिक अच् और हल् दोनों होते हैं। पदान्त यर् से परे अनुनासिक अच् कहीं नहीं मिलता अतः यहाँ हल् अनुनासिक का ही ग्रहण होगा। हलों में अनुनासिक पाँच वर्ण हैं– ङ्, ञ्, ण्, न् और म्। इन पाँचों में से कोई वर्ण परे हो तो पदान्त यर् को अनुनासिक विकल्प से होगा। यर् प्रत्याहार के अन्तर्गत ह् को छोड़कर अन्य सभी व्यञ्जनवर्ण आते हैं।

रूपसिद्धि –

एतन्मुरारिः, एतद् मुरारिः – एतद्+मुरारी इस स्थिति में **यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा** इस सूत्र से पदान्त यर् एतद् पद का अन्तिम दकार है एवं उससे परे अनुनासिक मुरारी घटक आदि मकार है, अतः पदान्त यर् (दकार) उसको अनुनासिक हुआ। **स्थानेऽन्तरतमः** इस सूत्र की सहायता से दकार को अनुनासिक स्थान साम्य के द्वारा नकार हुआ। एतन्+मुरारि इस स्थिति में वर्णसम्मेलन तथा स्वादिकार्य होकर एतन्मुरारिः रूप सिद्ध हुआ। जिस पक्ष में यर् को अनुनासिक नहीं होगा उस पक्ष में एतद् मुरारिः यह रूप बनेगा।

वार्तिक – प्रत्यये भाषायां नित्यम्।

अर्थ – लोक में अनुनासिक है आदि में जिसके ऐसे प्रत्यय परे रहते पदान्त यर् को नित्य ही अनुनासिक होता है।

उदाहरण – तन्मात्रम्। चिन्मयम्।

रूपसिद्धि –

तन्मात्रम् – तद्+मात्र इस स्थिति में तद् का दकार पदान्त यर् है अतः उससे परे मात्र (मात्रच् प्रत्यय) का मकार अनुनासिक है अतः **यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा** सूत्र से विकल्प से अनुनासिक प्राप्त है, जिसे बाधकर **प्रत्यये भाषायां नित्यम्** इस वार्तिक से लोक में प्रत्यय(मात्रच्)घटक अनुनासिक मकार के परे होने पर तद् के अन्तिम यर् दकार को नित्य अनुनासिक हुआ। यहाँ पर भी स्थान साम्य के द्वारा दकार को अनुनासिक नकार हुआ। तन्+मात्र इस स्थिति में वर्णसम्मेलन तथा स्वादिकार्य होकर तन्मात्रम् रूप सिद्ध हुआ।

चिन्मयम् – चित्+मय इस स्थिति में तद् का तकार पदान्त यर् है अतः उससे परे मय् (मयट् प्रत्यय) का मकार अनुनासिक है अतः **यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा** सूत्र से विकल्प से अनुनासिक प्राप्त है, जिसे बाधकर **प्रत्यये भाषायां नित्यम्** इस वार्तिक से लोक में प्रत्यय घटक अनुनासिक मकार के परे होने पर चित् के अन्तिम यर् तकार को नित्य अनुनासिक हुआ। यहाँ पर भी स्थान साम्य के द्वारा तकार को अनुनासिक नकार हुआ। चिन्+मय इस स्थिति में वर्णसम्मेलन तथा स्वादिकार्य होकर चिन्मयम् रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – तोर्लि(8.4.60)

वृत्ति – तवर्गस्य लकारे परे परसवर्णः।

सूत्रार्थ – लकार परे रहते तवर्ग के स्थान पर परसवर्ण आदेश होता है।

उदाहरण – तल्लयः। विद्वाल्ँलिखति। नस्यानुनासिको लः।

व्याख्या – यह परसवर्णविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। 'तोः' षष्ठी एकवचन और 'लि' यह सप्तमी एकवचन का पद है। परसवर्ण इस पद की अनुवृत्ति आती है। लकार परे होने पर परसवर्ण होना अर्थात् लकार ही होना, क्योंकि लकार का स्वयं के अतिरिक्त अन्य कोई सवर्ण नहीं है। लकार दो प्रकार का है– प्रथम

अनुनासिक (लँ) द्वितीय अननुनासिक (ल)। अतः तवर्ग के अन्तिम वर्ण अनुनासिक नकार के स्थान पर स्थानसाम्य के द्वारा अनुनासिक लँ होगा तथा अन्य चारों के स्थान पर अननुनासिक ल होगा।

रूपसिद्धि –

तल्लयः – तत्+लय इस स्थिति में लय के लकार के परे रहते **तोर्लि** इस सूत्र से तत् के त् के स्थान पर परसवर्ण अननुनासिक ल् आदेश हुआ। तल्+लय इस स्थिति में वर्णसम्मेलन तथा स्वादिकार्य होकर तल्लयः रूप सिद्ध हुआ।

विद्वाल्ँलिखति – विद्वान्+लिखति इस स्थिति में लिखति के लकार के परे रहते **तोर्लि** सूत्र से विद्वान् के अनुनासिक न् के स्थान पर परसवर्ण अनुनासिक ल् आदेश हुआ। विद्वालँ+लिखति इस स्थिति में वर्णसम्मेलनादि होकर विद्वाल्ँलिखति रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य(8.4.61)

वृत्ति – उदः परयोः स्थास्तम्भोः पूर्वसवर्णः।

सूत्रार्थ – उद् से परे स्था और स्तम्भ् को पूर्वसवर्ण होता है।

व्याख्या – यह पूर्वसवर्णविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद हैं। 'उदः' पंचमी एकवचन, 'स्थास्तम्भोः' यह षष्ठी द्विवचन का और 'पूर्वस्य' यह षष्ठी एकवचन का पद है। सवर्ण इस पद की अनुवृत्ति आती है। उदः में पंचमी है अतः उससे स्था और स्तम्भ् को पूर्वसवर्ण हो ऐसा सूत्र का सामान्य अर्थ है, अतः प्रश्न है कि स्था और स्तम्भ् को पूर्वसवर्ण उद् से पूर्व में होने पर होगा अथवा पर में। दूसरा यह भी प्रश्न उठता है कि व्यवधान रहित में होगा अथवा अव्यवहित में होगा। इन दोनों प्रश्नों का समाधान अग्रिम परिभाषासूत्र प्रस्तुत करता है।

सूत्र – तस्मादित्युत्तरस्य(1.1.67)

वृत्ति – पंचमीनिर्देशेन क्रियमाणं कार्यं वर्णान्तरेणाव्यवहितस्य परस्य ज्ञेयम्।

सूत्रार्थ – पंचमी को निर्देश करके होने वाला कार्य अव्ययहित पर के स्थान पर होना चाहिए।

व्याख्या – यह परिभाषासूत्र है। इस सूत्र में तीन पद हैं। 'तस्माद्' पंचमी एकवचन, 'इति' यह अव्यय और 'उत्तरस्य' यह षष्ठी एकवचन का पद है। जैसा कि पूर्व परिभाषासूत्रों में स्पष्ट किया गया है कि परिभाषासूत्र अनियम की स्थित में विधिसूत्रों के सहायक होते हैं। पूर्वसूत्र से प्राप्त पूर्वसवर्ण उद् के पूर्व में हो अथवा पर में हो इस अनियम को व्यवस्थित करते हुए यह सूत्र कहता है कि उदः में पंचमी है और उससे निर्दिष्ट पूर्वसवर्णरूप कार्य अव्यवहित पर को ही होगा।

सूत्र – आदेः परस्य(1.1.54)

वृत्ति – परस्य यद् विहितं तत्तस्यादेर्बोध्यम्। इति सस्य थः।

सूत्रार्थ – पर के स्थान पर जो कार्य विहित होता है वह उसके आदि वर्ण के स्थान पर ही होगा, ऐसा समझना चाहिए।

व्याख्या – यह सूत्र भी परिभाषासूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। 'आदेः' और 'परस्य' ये दोनों पद षष्ठी एकवचन के हैं। उद्+स्था इस स्थिति में **तस्मादित्युत्तरस्य** इस परिभाषासूत्र की सहायता से **उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य** सूत्र से उद् से परे स्था के स्थान पर पूर्वसवर्ण की प्राप्ति हुई। सूत्रस्थ स्थास्तम्भोः पद में षष्ठी है अतः **अलोऽन्त्यस्य** सूत्र से षष्ठीनिर्दिष्ट पद के अन्त्य अल् के स्थान पर पूर्वसवर्ण की प्राप्ति हुई। इस स्थिति में **आदेः परस्य** सूत्र से पर के स्थान पर विधीयमान कार्य वह उस पर स्थानी के आदि वर्ण के स्थान पर होगा। इस निर्देश के कारण यहाँ पूर्वसवर्णरूपी कार्य पर के स्थान पर हो रहा है वह पर स्थानी स्था और स्तम्भ के आदि सकार के स्थान पर हो। अतः उद्+स्थान के स्था के सकार के स्थान पर **स्थानेऽन्तरतमः** सूत्र की सहायता से थ् हुआ। उद्+थ्+थान यह स्थिति हुई।

सूत्र – झरो झरि सवर्णे (8.4.65)

वृत्ति – हलः परस्य झरो वा लोपः सवर्णे झरि।

सूत्रार्थ – हल् से परे झर् का विकल्प से लोप होता है, सवर्णी झर् के परे रहते।

व्याख्या – यह लोपविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद हैं। 'झरः' षष्ठी एकवचन, 'झरि' और 'सवर्णे' ये दोनों सप्तमी एकवचन के पद हैं। हल् प्रत्याहार के अन्तर्गत सभी व्यञ्जन वर्ण आते हैं तथा झर् प्रत्याहर के अन्तर्गत वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ एवं श, ष, और स ये वर्ण आते हैं।

सूत्र – खरि च (8.4.55)

वृत्ति – खरि झलां चरः। इत्युदो दस्य तः।

सूत्रार्थ – खर् के परे रहते झल् के स्थान पर चर् होता है।

उदाहरण – उत्थानम्। उत्तम्भनम्।

व्याख्या – यह चर्त्वविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। 'खरि' सप्तमी एकवचन तथा 'च' यह अव्यय पद है। झलां और चरः की अनुवृत्ति आती है। खर् प्रत्याहार के अन्तर्गत वर्गों के प्रथम, द्वितीय और श, ष, स – ये वर्ण आते हैं। चर् प्रत्याहार के अन्तर्गत वर्गों के प्रथम एवं श, ष, स ये वर्ण आते हैं। इस सूत्र से खर् के परे रहते झल् के स्थान पर चर् होता है अर्थात् वर्गों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ वर्ण के स्थान पर प्रथम उसी वर्ग का प्रथम वर्ण हो जाता है। श्, ष्, स् के स्थान पर स्थानसाम्य के कारण ये ही श्, ष्, स् आदेश होते हैं।

रूपसिद्धि –

उत्थानम् – उद्+स्थान इस स्थिति में **तस्मादित्युत्तरस्यआदेः परस्य** और **स्थानेऽन्तरतमः** इन तीनों परिभाषासूत्रों की सहायता से **उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य** सूत्र से उद् से परे स्थान के आदि सकार के स्थान पर थकार हुआ। उद्+थ्+थान इस स्थिति में **झरो झरि सवर्णे** सूत्र से उद् के दकार (हल्) से परे थ् (झर्) का थान (सवर्णी झर्) के थकार परे होने के कारण विकल्प से लोप हुआ। उद्+थान इस स्थिति में उद् के द् (हल्) के स्थान पर **खरि च** इस सूत्र से थान घटक थकार (खर्) के परे होने के कारण त् (चर्) आदेश हुआ। उत्+थान इस स्थिति में वर्णसम्मेलन तथा

स्वादिकार्य होकर के उत्थानम् रूप सिद्ध हुआ। जिस पक्ष में थकार का लोप नहीं होता है तो उत्थ्थानम् यह रूप बनेगा।

उत्तम्भनम् – उद्+स्तम्भन इस स्थिति में **तस्मादित्युत्तरस्य, आदेः परस्य** और **स्थानेऽन्तरतमः** इन तीनों परिभाषासूत्रों की सहायता से **उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य** सूत्र से उद् से परे स्तम्भन के सकार के स्थान पर थकार हुआ। उद्+थ्+तम्भन इस स्थिति में **झरो झरि सवर्णे** सूत्र से उद् के दकार से परे थ् का सवर्णी झर् (स्तम्भन के तकार) परे होने के कारण विकल्प से लोप हुआ। उद्+तम्भन इस स्थिति में उद् के अन्तिम द् के स्थान पर **खरि च** सूत्र से तम्भन घटक तकार के परे होने के कारण चर् (त्) आदेश हुआ। उत्+तम्भन इस स्थिति में वर्णसम्मेलन तथा स्वादिकार्य होकर उत्तम्भनम् रूप सिद्ध हुआ। जिस पक्ष में लोप नहीं होता तो उत्थ्तम्भनम् यह रूप बनेगा।

सूत्र – झयो होऽन्यतरस्याम्(8.4.62)

वृत्ति – झयः परस्य हस्य वा पूर्वसवर्णः। नादस्य घोषस्य संवारस्य महाप्राणस्य तादृशो वर्गचतुर्थः।

सूत्रार्थ – झय् से परे हकार के स्थान में विकल्प से पूर्वसवर्ण होता है। संवार, नाद, घोष और महाप्राण वाले हकार के स्थान पर वैसा ही वर्गों का चतुर्थ वर्ण होता है।

उदाहरण – वाग्घरिः, वाग्हरिः।

व्याख्या – यह पूर्वसवर्णविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद हैं। 'झयः' पंचमी एकवचन, 'हः' षष्ठी एकवचन का और 'अन्यतरस्याम्' यह षष्ठी बहुवचन का पद है। पूर्वस्य और सवर्णः इन दो पदों की अनुवृत्ति आती है। झय् प्रत्याहार के अन्तर्गत वर्गों के पंचमवर्ण को छोड़कर शेष सभी वर्ण आते हैं। अतः इनसे परे हकार को इनके सदृश पूर्वसवर्ण हकार के स्थान साम्य द्वारा वर्गों का चतुर्थ वर्ण होता है।

रूपसिद्धि –

वाग्घरिः, वाग्हरिः – वाक्+हरि इस स्थिति में **झलां जशोऽन्ते** इस सूत्र से पदान्त झल् वाक् के अन्तिम क् के स्थान पर जश् ग् हुआ। वाग्+हरि इस स्थिति में प्रस्तुत सूत्र **झयो होऽन्यतरस्याम्** से झय् वाग् के अन्तिम गकार से परे जो हरि घटक हकार उसको विकल्प से पूर्वसवर्ण प्राप्त हुआ। गकार के सवर्णी कवर्ग के पाँचों वर्ण हैं। यहाँ पर कौन सा आदेश हो? इसके लिए **स्थानेऽन्तरतमः** की सहायता से गुणकृत साम्य द्वारा हकार का बाह्य प्रयत्न संवार, नाद, घोष और महाप्राण है। कवर्ग में घकार ही संवार, नाद, घोष और महाप्राण बाह्य प्रयत्न वाला है अतः हकार के स्थान पर विकल्प से घकार आदेश हुआ। वाग्+घरि इस स्थिति में वर्णसम्मेलन तथा स्वादिकार्य होकर वाग्घरिः रूप सिद्ध हुआ। जिस पक्ष में हकार को घकार नहीं होगा उस पक्ष में वाग्हरिः रूप बनता है।

सूत्र – शश्छोऽटि(8.4.63)

वृत्ति – झयः परस्य शस्य छो वाटि। तद्शिवः इत्यत्र दस्य श्चुत्वेन जकारे कृते खरि चेति जकारस्य चकारः।

सूत्रार्थ – झय् से परे शकार के स्थान पर विकल्प से छकार आदेश होता है, अट् परे रहते। तद्+शिव इस अवस्था में दकार को श्चुत्व करके जकार तथा जकार को चर्त्व होकर चकार हुआ। तच्+शिव इस स्थिति में इस सूत्र की प्रवृत्ति होती है।

उदाहरण – तच्छिवः, तच्शिवः।

व्याख्या – यह छत्वविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद हैं। 'शः' षष्ठी एकवचन, 'छः' प्रथमा एकवचन और 'अटि' यह सप्तमी एकवचन का पद है। झयः और अन्यतरस्याम् पदों की अनुवृत्ति आती है। यह सूत्र त्रिपादी के अन्तर्गत आता है और त्रिपादी सूत्रों में पूर्वसूत्र के प्रति परसूत्र असिद्ध होता है। **स्तोः श्चुना श्चुः**(8.4.40), **खरि च**(8.4.55) इन दोनों सूत्रों के प्रति **शश्छोऽटि**(8.4.63) यह सूत्र असिद्ध है। अतः किसी प्रयोग में इन सूत्रों के पश्चात् ही इस सूत्र की प्रवृत्ति होगी।

रूपसिद्धि –

तच्छिवः, तच्शिवः – तद्+शिव इस स्थिति में **स्तोः श्चुना श्चुः** सूत्र से तद् के अन्तिम दकार को शकार परे रहते जकार हुआ। तज्+शिव इस स्थिति में **खरि च** ज् को चर्त्व च् हुआ। तच्+शिव इस स्थिति में शकारोत्तरवर्ती इकार रूपी अट् परे रहते **शश्छोऽटि** से झय् (तच् के अन्तिम चकार) से परे शिव के शकार को विकल्प से छकार हुआ। तच्+छिव इस स्थिति में वर्णसम्मेलन तथा स्वादिकार्य होकर तच्छिवः रूप सिद्ध हुआ। जिस पक्ष में शकार को छकार नहीं होता उस पक्ष में तच्शिवः यह रूप बनेगा।

वार्तिक – **छत्वममीति वाच्यम्।**

अर्थ – झय् से परे शकार के स्थान पर विकल्प से छकार आदेश के प्रसङ्ग में अट् परे रहते की जगह अम् परे रहते कहना चाहिए।

उदाहरण – तच्छ्लोकेन।

रूपसिद्धि –

तच्छ्लोकेन – तद्+श्लोक इस स्थिति में **स्तोः श्चुना श्चुः** सूत्र से तद् के दकार को शकार परे रहते जकार हुआ। तज्+श्लोक इस स्थिति में **खरि च** सूत्र से ज् को चर्त्व च् हुआ। तच्+श्लोक इस स्थिति में शकारोत्तरवर्ती लकार रूपी अम् परे रहते **छत्वममीति वाच्यम्** इस वार्तिक से झय् (तच् के अन्तिम चकार) से परे श्लोक के शकार को विकल्प से छकार हुआ। तच्+छ्लोक इस स्थिति में वर्णसम्मेलन तथा स्वादिकार्य होकर तच्छ्लोकेन रूप सिद्ध हुआ।

बोध प्रश्न

1. समुचित विकल्प का चयन कीजिए।

i. **स्तोः श्चुना श्चुः** सूत्र से सकार के स्थान पर आदेश होता है–

(क) च् (ख) ज् (ग) ष् (घ) श्

ii. **शात्** यह सूत्र है–

(क) संज्ञासूत्र (ख) विध्यर्थक विधिसूत्र

(ग) निषेधार्थक विधिसूत्र (घ) अधिकारसूत्र

iii. रामष्टीकते का सन्धिविच्छेद होता है–

(क) रामस्+टीकते (ख) रामष्ट्+ईकते (ग)रामश्+टीकते (घ) राम+टीकते

iv. चक्रिण्ढौकसे यह उदाहरण सूत्र का है–

(क) स्तोः श्चुना श्चुः (ख) शात् (ग) ष्टुना ष्टुः (घ) न पदान्ताट्टोरनाम्

v. स्तोः का अभिप्राय है–

(क) सकार एवं तकार (ख) शकार एवं चकार (ग) सकार एवं तवर्ग (घ) शकार एवं चवर्ग

2. **सत्य अथवा असत्य कथन हेतु क्रमशः सही (√) या गलत (×) का चिह्न लगाइए।**

i. सन्षष्ठः इस प्रयोग में ष्टुत्व होता है –( )

ii. जश् प्रत्याहार में वर्गों के तृतीय वर्ण आते हैं –( )

iii. **तोर्लि** यह संज्ञासूत्र है –( )

iv. एतन्मुरारिः का वैकल्पिक रूप सम्भव है –( )

v. वर्गों के पंचम वर्ण अनुनासिक होते हैं –( )

3. **समुचित उत्तर द्वारा रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।**

i. पदान्त में झल् के स्थान पर ....आदेश होता है।

ii. उत्थानम् का द्वितीय रूप ....होता है।

iii. **तस्मादित्युत्तरस्य** यह...........सूत्र है।

iv. **शश्छोऽटि** इस सूत्र का उदाहरण ....है।

v. परिभाषासूत्र विधिसूत्रों के......... होते हैं।

अभ्यास प्रश्न

i. **उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य** सूत्रस्थपदों की सङ्ख्या एवं विभक्तियाँ बताइए।

ii. **झयो होऽन्यतरस्याम्** इस सूत्र की कार्यविधि को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

iii. झल् को चर् होने से क्या अभिप्राय है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

iv. **ष्टुना ष्टुः** सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

v. खर् और चर् में क्या अन्तर है? बताइए।

6.3 सारांश

इस इकाई में आपने हल् सन्धि के अन्तर्गत श्चुत्व, ष्टुत्व, अनुनासिक, जश्त्व, परसवर्ण, पूर्वसवर्ण, चर्त्व और छत्व इन हल् सन्धियों को भली-भाँति जाना। सामान्य नियम के अपवादभूत विशेष निमयों का भी ज्ञान प्राप्त किया, यथा–**ष्टुना ष्टुः** से सामान्य नियम के अनुसार षकार और टवर्ग के योग में सकार और तवर्ग को षकार एवं टवर्ग होता है। इस सूत्र को समझने के पश्चात् इसके अपवादसूत्र **न पदान्ताट्टोरनाम्** से यह भी

जाना कि पदान्त टवर्ग से परे सकार एवं टवर्ग को ष्टुत्व नहीं होता है। इस प्रकार के अन्य उदाहरणों को भी हमने देखा। हल् सन्धि में एक स्थान पर जब अनेक आदेशों की प्राप्ति होती है तो यह ज्ञात करना कठिन हो जाता है कि कौन सा आदेश हो? क्योंकि स्थानसाम्य के प्रसङ्ग में एकाधिक आदेशों के उच्चारणस्थान समान रहते हैं। इस स्थिति में हमें गुणकृत साम्य का आश्रय लेकर बाह्य प्रयत्नों का साम्य देखना पड़ता है। सम्भवतः इसी कारण से लघुसिद्धान्तकौमुदी के वृत्तिकार अपनी वृत्ति में स्पष्टता हेतु साक्षात् लिखते हैं कि संवार, नाद, घोष और महाप्राण हकार के स्थान पर ये ही बाह्य प्रयत्न वाला घकार होगा।

6.4 शब्दावली

श्चुत्व – सन्धि के स्थल में यदि सकार और तवर्ग का शकार और चवर्ग के साथ योग (मेल) हो तो सकार एवं तवर्ग (त्,थ्,द्,ध्,न्) के स्थान पर शकार एवं चवर्ग (च्,छ्,ज्,झ्,ञ्) आदेश का होना श्चुत्व कहलाता है।

यह मेल दो प्रकार से हो सकता है–

1) सकार अथवा तवर्ग के बाद शकार या चवर्ग हो, अथवा
2) सकार अथवा तवर्ग से पहले शकार या चवर्ग हो।

इस प्रकार सकार, चवर्ग से अव्यवहित पूर्व या पर में शकार, चवर्ग के होने पर सकार, तवर्ग के स्थान पर शकार, चवर्ग हो जाना ही श्चुत्व है।

ष्टुत्व – सन्धि के स्थल में यदि सकार और तवर्ग का षकार और टवर्ग के साथ योग हो तो सकार एवं तवर्ग (त्,थ्,द्,ध्,न्) के स्थान पर षकार एवं टवर्ग (ट्,ठ्,ड्,ढ्,ण्) आदेश का होना ष्टुत्व कहलाता है।

यह मेल दो प्रकार से हो सकता है–

1) सकार अथवा तवर्ग के बाद षकार या टवर्ग हो, अथवा
2) सकार अथवा तवर्ग से पहले षकार या टवर्ग हो।

अर्थात् सकार, तवर्ग से अव्यवहित पूर्व या पर में षकार, टवर्ग के होने पर सकार, तवर्ग के स्थान में षकार, टवर्ग हो जाना ही ष्टुत्व है।

पदान्त – सुप् तथा तिङ् प्रत्यय जिन शब्दों के अन्त में हों उन्हें क्रमशः सुबन्त व तिङन्त कहा जाता है। पाणिनि ने **सुप्तिङन्तं पदम्** सूत्र के द्वारा इन्हीं सुबन्तों एवं तिङन्तों की पदसंज्ञा की है अर्थात् सुबन्त एवं तिङन्त को पद कहते हैं और पद के अन्त को पदान्त कहते हैं।

अनुनासिक – जिन वर्णों का उच्चारण मुख के साथ नासिका से किया जाता है, उनकी अनुनासिक संज्ञा होती है। संज्ञाप्रकरण में वर्णित **मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः** इस सूत्र से यह अनुनासिकसंज्ञा होती है।

जश्त्व – जश्त्व से अभिप्राय है जश् होना। जश् के अन्तर्गत वर्गों के तृतीय वर्ण आते हैं। जैसे झल् के स्थान पर निम्नलिखित प्रकार से जश्त्व होगा –

क्, ख्, ग्, घ् और ह् के स्थान पर ग् आदेश होगा।

च्, छ्, ज्, झ् और श् के स्थान पर ज् आदेश होगा।

ट्, ठ्, ड्, ढ् और ष् के स्थान पर ड् आदेश होगा।

त्, थ्, द्, ध् और स् के स्थान पर द् आदेश होगा।

प्, फ्, ब् और भ् के स्थान पर ब् आदेश होगा।

6.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

वरदराजाचार्य, मूल लघुसिद्धान्तकौमुदी. गोरखपुर, गीताप्रेस.

वरदराजाचार्य, हिन्दी व्या॰ गोविन्दाचार्य. लघुसिद्धान्तकौमुदी. दिल्ली, चौखम्भा सुरभारती.

वरदराजाचार्य, हिन्दी व्या॰ शास्त्री, धरानन्द. लघुसिद्धान्तकौमुदी. दिल्ली, मोतीलाल बनारसी दास.

वरदराजाचार्य, हिन्दी व्या॰ शास्त्री, भीमसेन. लघुसिद्धान्तकौमुदी. (भाग–1–6), दिल्ली, भैमी प्रकाशन.

शास्त्री, चारुदेव. व्याकरण चन्द्रोदय. (भाग–1–3), दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास.

वरदराजाचार्य, सम्पा॰ एवं हिन्दी सिंह, सत्यपाल. लघुसिद्धान्तकौमुदी. दिल्ली, शिवालिक पब्लिकेशन.

Apte, V.S. ***The Students' Guide to Sanskrit Composition*****.** Chowkhamba Sanskrit Series, Varanasi.

Kale, M.R. ***Higher Sanskrit Grammar*** **.**MLBD, Delhi.

Kanshi Ram, ***Laghusiddhantkaumudi***. (Vol. 1-3). MLBD. Delhi, 2009.

Ballantyne, James R. ***Laghusiddhantkaumudi***. Chowkhamba Sanskrit Series, Varanasi.

6.6 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न

1. i.घ, ii. ग, iii. क, iv. ग v. ग
2. i. असत्य, ii. सत्य, iii. असत्य, iv. सत्य, v. सत्य
3. i.जश्, ii. नहीं, iii. परिभाषासूत्र, iv. सञ्छम्भुः, v. अर्थोपकारक

अभ्यास प्रश्न

इन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।